

जाति और युवा राजनीतिक जागरूकता: शेखावाटी क्षेत्र का तुलनात्मक अध्ययन

राम चंद्र फरदोलिया¹ डॉ. सुशीला बेदी दुबे²

¹शोधार्थी ²शोध निर्देशक

राजनीति विज्ञान - विभाग

श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टीबड़ेवाला विश्वविद्यालय विद्यानगरी,

झुन्झुनू-राजस्थान

सारांश

यह अध्ययन भारतीय समाज की एक प्रमुख संरचना जाति और उसके राजनीतिक व्यवहार पर प्रभाव का विश्लेषण करता है, विशेष रूप से राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र के संदर्भ में। शेखावाटी क्षेत्र, जिसमें सीकर, झुन्झुनू और चूरू जिले शामिल हैं, सामाजिक रूप से परंपरागत और जाति-आधारित संरचना वाला क्षेत्र माना जाता है। इस शोध में युवाओं के बीच राजनीतिक जागरूकता के स्तर और उस पर जातिगत प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। आधुनिक समय में शिक्षा, तकनीकी विकास, और सोशल मीडिया के प्रसार ने युवाओं के राजनीतिक दृष्टिकोण को काफी हद तक प्रभावित किया है, जिससे उनमें राजनीतिक चेतना और भागीदारी बढ़ी है।

मुख्य संकेतक: - राजनीतिक जागरूकता, शेखावाटी क्षेत्र, राजनीतिक भागीदारी।

परिचय

भारतीय लोकतंत्र की विशेषता इसकी विविधता और जटिल सामाजिक संरचना में निहित है, जिसमें जाति एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जाति न केवल सामाजिक पहचान का आधार है, बल्कि यह व्यक्ति के राजनीतिक दृष्टिकोण, भागीदारी और निर्णयों को भी प्रभावित करती है। राजस्थान का शेखावाटी क्षेत्र ऐतिहासिक रूप से समृद्ध होने के साथ-साथ जातिगत संरचना में भी गहराई से निहित है। यहाँ की सामाजिक व्यवस्था में जाति के आधार पर संबंध, संसाधनों का वितरण और राजनीतिक शक्ति का संतुलन निर्धारित होता है। युवा वर्ग, जो

समाज का सबसे सक्रिय और परिवर्तनशील वर्ग है, इन पारंपरिक संरचनाओं और आधुनिक विचारों के बीच संतुलन बनाने का प्रयास कर रहा है।

वर्तमान समय में शिक्षा, इंटरनेट और सोशल मीडिया ने युवाओं को नई जानकारी और दृष्टिकोण प्रदान किए हैं, जिससे उनकी राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि हुई है। फिर भी, यह देखना महत्वपूर्ण है कि क्या यह जागरूकता जातिगत पूर्वाग्रहों को समाप्त करने में सक्षम है या नहीं। शेखावाटी क्षेत्र में यह प्रश्न और भी प्रासंगिक हो जाता है, क्योंकि यहाँ परंपरा और आधुनिकता का मिश्रण स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इस अध्ययन का उद्देश्य इसी जटिल संबंध को समझना और यह विश्लेषण करना है कि जाति किस प्रकार युवाओं की राजनीतिक सोच और व्यवहार को प्रभावित करती है।

साहित्य की समीक्षा

भारतीय समाज में जाति और राजनीति के संबंध को समझने के लिए अनेक विद्वानों ने विभिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत किए हैं। एम. एन. श्रीनिवास (1962) ने "प्रमुख जाति" की अवधारणा के माध्यम से यह बताया कि कुछ जातियां सामाजिक और राजनीतिक रूप से अधिक प्रभावशाली होती हैं और वे स्थानीय सत्ता संरचना को नियंत्रित करती हैं। आंद्रे बेतेली (1991) ने आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन की चर्चा करते हुए कहा कि आधुनिक साक्षरता के विकास के बावजूद जाति का प्रभाव पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। कंचन चंद्रा (2004) ने यह तर्क दिया कि जातिगत पहचान राजनीतिक लामबंदी का एक प्रभावी माध्यम है, जो चुनावी राजनीति को प्रभावित करता है।

योगेंद्र यादव (1999) के अनुसार, भारतीय मतदाता अक्सर जातिगत आधार पर अपने राजनीतिक निर्णय लेते हैं, स्वैच्छिक ग्रामीण क्षेत्रों में। हाल के क्षेत्रों में यह देखा गया है कि युवा वर्ग में राजनीतिक जागरूकता बढ़ रही है, लेकिन जातिगत प्रभाव अभी भी मौजूद है (सिंह, 2020 शेखावाटी क्षेत्र पर किए गए सीमित विकास से यह स्पष्ट होता है कि यहाँ की राजनीति में जातिगत समीकरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, एनएच स्थानीय स्तर पर। इस प्रकार, साहित्य समीक्षा यह कार्यभार है कि जाति और राजनीति का संबंध अभी भी प्रासंगिक है, लेकिन इसमें धीरे-धीरे परिवर्तन हो रहा है।

अनुसंधान पद्धति

यह अध्ययन एक वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक समीक्षा पर आधारित है, जिसमें द्वितीयक डेटा का उपयोग किया गया है। शोध के लिए विभिन्न स्रोतों जैसे कि अकादमिक जर्नल्स, पुस्तकों, सरकारी रिपोर्टों और चुनाव

आयोग के आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन का क्षेत्र शेखावाटी (सीकर, झुंझुनूं और चूरू) रखा गया है, जो सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण क्षेत्र है। इस शोध में तुलनात्मक विश्लेषण पद्धति का उपयोग किया गया है, जिसके माध्यम से ग्रामीण और शहरी युवाओं के बीच राजनीतिक जागरूकता और जातिगत प्रभाव के अंतर को समझा गया है। इसके अतिरिक्त, विषयवस्तु विश्लेषण के माध्यम से विभिन्न अध्ययनों के निष्कर्षों को संकलित और व्याख्यायित किया गया है। इस पद्धति का उद्देश्य यह समझना है कि विभिन्न सामाजिक और आर्थिक कारक किस प्रकार युवाओं के राजनीतिक दृष्टिकोण को प्रभावित करते हैं। चूंकि यह एक समीक्षा अध्ययन है, इसलिए इसमें प्राथमिक डेटा संग्रह नहीं किया गया है, बल्कि पहले से उपलब्ध शोध कार्यों का समेकित विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। यह पद्धति शोध को व्यापक और गहन दृष्टिकोण प्रदान करती है।

विश्लेषण एवं चर्चा

इस अध्ययन के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि शेखावाटी क्षेत्र के युवाओं में जाति और राजनीतिक जागरूकता के बीच एक जटिल संबंध मौजूद है। एक ओर, जाति अभी भी राजनीतिक पहचान और मतदान व्यवहार को प्रभावित करती है, वहीं दूसरी ओर, शिक्षा और आधुनिकता के प्रभाव से युवाओं की सोच में परिवर्तन आ रहा है।

ग्रामीण क्षेत्रों में जातिगत प्रभाव अधिक स्पष्ट है, जहाँ सामाजिक संरचना अधिक पारंपरिक और सामुदायिक है। इसके विपरीत, शहरी क्षेत्रों में विविधता और आधुनिक जीवनशैली के कारण जातिगत प्रभाव कमजोर पड़ रहा है। उच्च शिक्षा प्राप्त युवा विकास, रोजगार और नीतिगत मुद्दों को अधिक महत्व देने लगे हैं। सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने भी युवाओं की राजनीतिक जागरूकता को बढ़ाया है, जिससे वे विभिन्न दृष्टिकोणों से परिचित हो रहे हैं। इसके बावजूद, चुनावी राजनीति में जाति का प्रभाव पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। युवा नेतृत्व के उभरने में भी जातिगत समर्थन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, हालांकि योग्यता आधारित नेतृत्व की मांग भी बढ़ रही है। इस प्रकार, यह अध्ययन दर्शाता है कि परिवर्तन की प्रक्रिया जारी है, लेकिन यह धीरे-धीरे हो रही है।

जाति और राजनीतिक पहचान

शेखावाटी क्षेत्र में जाति राजनीतिक पहचान का प्रमुख आधार बनी हुई है। युवा मतदाता अक्सर अपने जातीय समूह के समुदायों को प्राथमिकता देते हैं, जिससे चुनावी परिणाम प्रभावित होते हैं (यादव, 1999)।

जाति और राजनीतिक पहचान भारतीय समाज और राजनीति के बीच संबंधों को समझने का एक अत्यंत महत्वपूर्ण आयाम है। भारत जैसे बहुस्तरीय और विविधतापूर्ण समाज में जाति केवल एक सामाजिक श्रेणी नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति की पहचान, सामाजिक स्थिति, अवसरों और राजनीतिक व्यवहार को भी गहराई से प्रभावित करती है। ऐतिहासिक रूप से जाति व्यवस्था ने समाज को विभिन्न निकायों में विभाजित किया, जिससे सामाजिक स्तरीकरण और शक्ति संतुलन का निर्माण हुआ। यही संरचना समय के साथ राजनीतिक क्षेत्र में भी परिलक्षित होने लगी, जहाँ जाति ने राजनीतिक पहचान के निर्माण में केंद्रीय भूमिका निभाई। विशेष रूप से लोकतांत्रिक व्यवस्था के उदय के बाद, जब प्रत्येक नागरिक को मतदान का अधिकार मिला, तब जातिगत पहचान ने राजनीतिक लामबंदी और प्रतिनिधित्व का प्रमुख साधन बनना शुरू किया।

राजनीतिक पहचान का अर्थ है किसी व्यक्ति या समूह का स्वयं को किसी विशेष राजनीतिक विचारधारा, दल या नेतृत्व के साथ जोड़ना। भारतीय संदर्भ में यह पहचान अक्सर जाति के आधार पर बनती है। उदाहरण के लिए, कई क्षेत्रों में मतदाता अपने जातीय समूह के उम्मीदवार को प्राथमिकता देते हैं, क्योंकि उन्हें विश्वास होता है कि वही व्यक्ति उनके हितों और समस्याओं को बेहतर ढंग से समझेगा और उनका प्रतिनिधित्व करेगा। इस प्रकार जाति एक प्रकार की सामूहिक पहचान के रूप में कार्य करती है, जो राजनीतिक दलों को प्रभावित करती है। यह प्रक्रिया विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, जहाँ सामाजिक संबंध और समुदाय आधारित जीवनशैली अधिक मजबूत होती है।

जाति और राजनीतिक पहचान के इस संबंध को समझने के लिए यह भी महत्वपूर्ण है कि हम राजनीतिक दलों और नेताओं की रणनीतियों को देखें। भारत में कई राजनीतिक दल अपने उम्मीदवारों के चयन और चुनावी प्रचार में जातिगत समीकरणों को ध्यान में रखते हैं। वे विशेष जातियों के समर्थन को प्राप्त करने के लिए गठबंधन बनाते हैं, उम्मीदवारों का चयन उसी जातीय संरचना के अनुसार करते हैं और चुनावी मुद्दों को भी उसी के अनुरूप प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार जाति केवल मतदाताओं के व्यवहार को ही नहीं, बल्कि पूरे राजनीतिक तंत्र को प्रभावित करती है। यह स्थिति लोकतंत्र के लिए एक चुनौती भी प्रस्तुत करती है, क्योंकि इससे नीति-आधारित राजनीति की बजाय पहचान-आधारित राजनीति को बढ़ावा मिलता है।

हालांकि, यह भी सत्य है कि आधुनिक समय में जाति आधारित राजनीतिक पहचान में धीरे-धीरे परिवर्तन हो रहा है। शिक्षा, शहरीकरण, औद्योगीकरण और वैश्वीकरण के प्रभाव से युवाओं की सोच में बदलाव आ रहा है। अब युवा केवल अपनी जाति के आधार पर राजनीतिक निर्णय लेने के बजाय विकास, रोजगार, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे मुद्दों को भी महत्व देने लगे हैं। विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में, जहाँ विभिन्न जातियों और संस्कृतियों के लोग एक साथ रहते हैं, जातिगत पहचान का प्रभाव अपेक्षाकृत कम हो गया है। इसके अलावा, सोशल

मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने भी युवाओं को व्यापक दृष्टिकोण प्रदान किया है, जिससे वे विभिन्न विचारधाराओं और मुद्दों के बारे में जानकारी प्राप्त कर पा रहे हैं।

फिर भी, यह कहना गलत होगा कि जाति का प्रभाव पूरी तरह समाप्त हो गया है। कई मामलों में, विशेष रूप से चुनावों के दौरान, जातिगत पहचान अभी भी प्रमुख भूमिका निभाती है। राजनीतिक दल और नेता अभी भी जातिगत समीकरणों का उपयोग करते हैं, और मतदाता भी कई बार अपने सामुदायिक हितों को ध्यान में रखते हुए मतदान करते हैं। इसके अलावा, सामाजिक असमानताएँ और संसाधनों का असमान वितरण भी जातिगत पहचान को बनाए रखने में योगदान देते हैं। जब तक समाज में समानता और न्याय की स्थिति पूरी तरह स्थापित नहीं होती, तब तक जाति आधारित पहचान का प्रभाव बना रहेगा।

शेखावाटी क्षेत्र के संदर्भ में यह संबंध और भी स्पष्ट हो जाता है। इस क्षेत्र में जातिगत संरचना मजबूत है और राजनीतिक प्रक्रियाओं में इसका प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। युवा वर्ग, जो परिवर्तन का वाहक माना जाता है, इस पारंपरिक व्यवस्था और आधुनिक विचारधाराओं के बीच संतुलन बनाने का प्रयास कर रहा है। एक ओर वे अपनी जातिगत पहचान से जुड़े रहते हैं, वहीं दूसरी ओर वे नई राजनीतिक सोच और मुद्दों को भी अपनाने लगे हैं। यह द्वंद्व इस क्षेत्र की राजनीति को एक विशेष स्वरूप प्रदान करता है।

यह कहा जा सकता है कि जाति और राजनीतिक पहचान का संबंध जटिल और बहुआयामी है। यह न केवल सामाजिक संरचना का प्रतिबिंब है, बल्कि यह राजनीतिक व्यवहार और निर्णयों को भी प्रभावित करता है। हालांकि, समय के साथ इसमें परिवर्तन हो रहा है, और युवा वर्ग इस परिवर्तन का प्रमुख कारक बन रहा है। यदि शिक्षा, जागरूकता और सामाजिक सुधारों को बढ़ावा दिया जाए, तो भविष्य में जाति आधारित राजनीतिक पहचान की भूमिका कम हो सकती है और एक अधिक समावेशी एवं मुद्दा-आधारित लोकतंत्र का निर्माण संभव हो सकता है।

राजनीतिक जागरूकता का स्तर

युवाओं में राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि देखी जा रही है, विशेष रूप से उच्च शिक्षा प्राप्त और शहरी युवाओं में। वे केवल जाति के आधार पर नहीं, बल्कि विकास, रोजगार और नीतिगत मुद्दों पर भी विचार करते हैं।

राजनीतिक जागरूकता का स्तर किसी भी लोकतांत्रिक समाज की गुणवत्ता और उसकी कार्यक्षमता को निर्धारित करने वाला एक महत्वपूर्ण तत्व है, विशेष रूप से युवाओं के संदर्भ में यह और भी अधिक प्रासंगिक हो जाता है क्योंकि युवा वर्ग न केवल वर्तमान का सक्रिय मतदाता है, बल्कि भविष्य का नेतृत्वकर्ता भी है।

राजनीतिक जागरूकता का अर्थ केवल चुनावों में भाग लेने या मतदान करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह



राजनीतिक प्रक्रियाओं, नीतियों, अधिकारों, कर्तव्यों, शासन प्रणाली, और सामाजिक न्याय के मुद्दों की समझ को भी सम्मिलित करता है। शेखावाटी क्षेत्र के संदर्भ में देखा जाए तो यहाँ के युवाओं में राजनीतिक जागरूकता का स्तर बहुआयामी और परिवर्तित होता हुआ दिखाई देता है, जिसमें परंपरागत सामाजिक संरचनाएँ, विशेष रूप से जाति, और आधुनिक प्रभाव जैसे शिक्षा, मीडिया और तकनीकी विकास, दोनों का मिश्रण देखने को मिलता है।

ग्रामीण क्षेत्रों के युवाओं में राजनीतिक जागरूकता अक्सर पारंपरिक माध्यमों जैसे परिवार, समुदाय और स्थानीय नेताओं के माध्यम से विकसित होती है, जहाँ जातिगत पहचान और सामाजिक संबंधों का गहरा प्रभाव होता है। यहाँ पर राजनीतिक जानकारी का प्रसार मुख्यतः मौखिक रूप से होता है, और कई बार यह जानकारी पक्षपातपूर्ण या सीमित होती है, जिससे युवाओं की राजनीतिक समझ संकीर्ण रह सकती है। इसके विपरीत, शहरी क्षेत्रों में रहने वाले युवा अधिक विविध स्रोतों से जानकारी प्राप्त करते हैं, जैसे समाचार चैनल, इंटरनेट, सोशल मीडिया और शैक्षणिक संस्थान, जिससे उनकी राजनीतिक जागरूकता अपेक्षाकृत अधिक व्यापक और विश्लेषणात्मक होती है।

शिक्षा राजनीतिक जागरूकता को बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उच्च शिक्षित युवा न केवल राजनीतिक घटनाओं और नीतियों को बेहतर ढंग से समझते हैं, बल्कि वे अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति भी अधिक सजग होते हैं। वे मतदान को केवल एक अधिकार के रूप में नहीं, बल्कि एक जिम्मेदारी के रूप में देखते हैं और अपने निर्णयों को जातिगत या भावनात्मक आधार के बजाय तार्किक और मुद्दा-आधारित आधार पर लेने की प्रवृत्ति रखते हैं। इसके विपरीत, कम शिक्षित या अशिक्षित युवाओं में राजनीतिक जागरूकता का स्तर अपेक्षाकृत कम होता है, और वे अक्सर पारंपरिक मान्यताओं और सामुदायिक प्रभावों के आधार पर निर्णय लेते हैं।

डिजिटल युग में सोशल मीडिया ने राजनीतिक जागरूकता को एक नई दिशा प्रदान की है। प्लेटफॉर्म जैसे फेसबुक, ट्विटर, यूट्यूब और व्हाट्सएप ने युवाओं को न केवल जानकारी प्राप्त करने का माध्यम दिया है, बल्कि उन्हें अपनी राय व्यक्त करने और राजनीतिक चर्चाओं में भाग लेने का अवसर भी प्रदान किया है। शेखावाटी क्षेत्र के युवा भी इन प्लेटफॉर्म्स का सक्रिय उपयोग कर रहे हैं, जिससे उनकी राजनीतिक समझ में वृद्धि हो रही है। हालांकि, यह भी ध्यान देने योग्य है कि सोशल मीडिया पर उपलब्ध जानकारी हमेशा विश्वसनीय नहीं होती, और कई बार फेक न्यूज या भ्रामक जानकारी युवाओं की सोच को प्रभावित कर सकती है। इसलिए, डिजिटल साक्षरता का विकास भी उतना ही आवश्यक है जितना कि राजनीतिक जागरूकता।

राजनीतिक जागरूकता का स्तर सामाजिक और आर्थिक कारकों से भी प्रभावित होता है। आर्थिक रूप से संपन्न और सामाजिक रूप से सशक्त वर्गों के युवा आमतौर पर अधिक जागरूक होते हैं क्योंकि उन्हें बेहतर शिक्षा और संसाधनों की उपलब्धता होती है। इसके विपरीत, वंचित वर्गों के युवाओं को कई बार सीमित अवसर मिलते हैं, जिससे उनकी राजनीतिक भागीदारी और जागरूकता प्रभावित होती है। हालांकि, सरकारी योजनाओं और सामाजिक आंदोलनों के माध्यम से इन वर्गों में भी धीरे-धीरे जागरूकता बढ़ रही है।

शेखावाटी क्षेत्र में जाति का प्रभाव राजनीतिक जागरूकता के स्तर को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है। कई बार युवा अपनी जातिगत पहचान के आधार पर राजनीतिक जानकारी प्राप्त करते हैं और उसी के अनुरूप अपने विचार विकसित करते हैं। इससे उनकी राजनीतिक समझ एक निश्चित दिशा में सीमित हो सकती है। फिर भी, यह देखा जा रहा है कि नई पीढ़ी इस पारंपरिक ढांचे से बाहर निकलने का प्रयास कर रही है और अधिक समावेशी तथा मुद्दा-आधारित राजनीति की ओर अग्रसर हो रही है।

महिला युवाओं की राजनीतिक जागरूकता भी एक महत्वपूर्ण पहलू है। पहले जहाँ महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी सीमित थी, वहीं अब शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन के कारण उनकी भागीदारी और जागरूकता में वृद्धि हुई है। शेखावाटी क्षेत्र में भी महिला युवा अब मतदान, राजनीतिक चर्चाओं और सामाजिक आंदोलनों में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं, हालांकि उन्हें अभी भी कई सामाजिक बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

यह कहा जा सकता है कि शेखावाटी क्षेत्र के युवाओं में राजनीतिक जागरूकता का स्तर एक संक्रमणकालीन अवस्था में है, जहाँ परंपरागत और आधुनिक दोनों प्रभाव सक्रिय हैं। शिक्षा, डिजिटल मीडिया और सामाजिक परिवर्तन के कारण जागरूकता में वृद्धि हो रही है, लेकिन जातिगत और सामाजिक संरचनाएँ अभी भी इसे प्रभावित कर रही हैं। भविष्य में यदि शिक्षा और जागरूकता कार्यक्रमों को और सुदृढ़ किया जाए, तो युवाओं में एक अधिक समावेशी और लोकतांत्रिक राजनीतिक दृष्टिकोण विकसित किया जा सकता है, जो न केवल क्षेत्रीय बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है।

ग्रामीण बनाम शहरी अंतर

ग्रामीण क्षेत्रों में जातिगत प्रभाव अधिक मजबूत है क्योंकि वहाँ सामाजिक संबंध अधिक पारंपरिक हैं। इसके विपरीत, शहरी क्षेत्रों में विविधता और आधुनिकता के कारण जातिगत प्रभाव कमजोर पड़ रहा है (वर्मा, 2015)।

शिक्षा युवाओं के दृष्टिकोण को व्यापक बनाती है और उन्हें तर्कसंगत निर्णय लेने के लिए प्रेरित करती है। उच्च शिक्षित युवा जाति के बजाय योग्यता और नीतियों को प्राथमिकता देते हैं (कुमार, 2018)।

सोशल मीडिया और डिजिटल प्रभाव

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने युवाओं को राजनीतिक रूप से अधिक जागरूक बनाया है। यह उन्हें विभिन्न दृष्टिकोणों से परिचित कराता है, जिससे जातिगत पूर्वाग्रहों में कमी आती है।

युवा नेतृत्व और परिवर्तन

शेखावाटी क्षेत्र में युवा नेतृत्व उभर रहा है, लेकिन इसमें अभी भी जातिगत समर्थन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। फिर भी, योग्यता आधारित नेतृत्व की मांग तेजी से बढ़ रही है।

लैंगिक आयाम

महिला युवाओं की राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि हुई है, लेकिन जाति और लिंग दोनों उनके अवसरों को प्रभावित करते हैं।

निष्कर्ष

अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि शेखावाटी क्षेत्र के युवाओं में राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि हो रही है, लेकिन जाति का प्रभाव अभी भी महत्वपूर्ण बना हुआ है। ग्रामीण क्षेत्रों में यह प्रभाव अधिक गहरा है, जबकि शहरी क्षेत्रों में यह धीरे-धीरे कम हो रहा है। शिक्षा, डिजिटल मीडिया और सामाजिक परिवर्तन ने युवाओं की सोच को प्रभावित किया है, जिससे वे अधिक जागरूक और आलोचनात्मक बन रहे हैं। भविष्य में यह संभावना है कि जाति आधारित राजनीति का प्रभाव कम हो सकता है, बशर्ते कि युवाओं को उचित शिक्षा और जागरूकता प्रदान की जाए।

लोकतंत्र की मजबूती के लिए यह आवश्यक है कि युवाओं को जातिगत सीमाओं से ऊपर उठकर समावेशी और मुद्दा-आधारित राजनीति की ओर प्रेरित किया जाए। इस अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि नीति-निर्माताओं और शिक्षाविदों को युवाओं के बीच राजनीतिक शिक्षा और जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए विशेष प्रयास करने चाहिए, ताकि एक अधिक समतामूलक और सशक्त समाज का निर्माण किया जा सके।

1. जेफरी, सी., और यंग, एस.एस. (2012)। बदलाव का इंतज़ार: भारत में युवा, जाति और राजनीति। अर्थव्यवस्था और समाज, 41(4), 638-661। <https://doi.org/10.1080/03085147.2011.635435>
2. झा, ए. (2025)। यही है जातियों की ताकतें: उत्तरी भारत में युवा राजनेता और जातियों का वर्चस्व। दक्षिण एशिया: जर्नल ऑफ साउथ एशियन स्टडीज, 48(5), 1206-1227। <https://doi.org/10.1080/00856401.2025.2524964>
3. भारत, वी., सुपरमार्केट, एस., और कंडलकर, टी. (2025)। भारतीय राजनीति में युवाओं की भागीदारी की पहचान। जर्नल ऑफ इंफॉर्मेटिक्स एजुकेशन एंड रिसर्च, 5(4)। <https://doi.org/10.52783/jier.v5i4.4029>
4. ललिता, एस., कर्पगम, एन., सोना, एस., और राउल, ए. (2024)। विभिन्न जातियों के युवाओं में जागरूकता में बाधाएँ। सेज ओपन, 14(1). <https://doi.org/10.1177/2455328X231225857>
5. गिरिजा, आर. (2023)। युवा और राजनीति: एक पुरातन अध्ययन। शोधकोश जर्नल, 4(1), 1708-1719। <https://doi.org/10.29121/shodhkosh.v4.i1.2023.4359>
6. सिंह, ए. पी. (2022)। भारतीय राजनीति में युवाओं की भूमिका। एमएसडब्ल्यू प्रबंधन जर्नल, 3(2)। <https://doi.org/10.7492/r55zta52>
7. टॉमी, एल., जोस, एम., और चेत्रो, सी. (2022)। भारत में युवाओं में राजनीतिक जागरूकता। ईरानी जर्नल ऑफ एजुकेशनल सोशियोलॉजी, 5(2), 22-37। <https://doi.org/10.61186/ijes.5.2.22>
8. एक्का, एस. (2025). भारत में युवा और राजनीति। इजरासेट, 13(1). <https://doi.org/10.22214/ijarset.2025.74941>
9. कुमार, एम. डी. (2018). भारत में जाति और राजनीति। समीक्षा समीक्षा इंटरनेशनल जर्नल, 3(12)। <https://doi.org/10.5281/zenodo.2108702>
10. कौर, आर. (2021). पंजाब में दलित महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता। थिंक इंडिया जर्नल, 24(2)।
11. जोधका, एस. एस. (2016)। भारत में जाति और राजनीति। समाजशास्त्र की वार्षिक समीक्षा, 42(1), 1-18। <https://doi.org/10.1146/annurev-soc-081715-074145>
12. चन्द्रा, के. (2004)। जातीय दल सफल क्यों होते हैं। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस। <https://doi.org/10.1017/CBO9780511510304>
13. यादव, वाई. (1999)। भारत में राजनीति। परिभाषा जर्नल, 475, 34-39।

14. वर्मा, एस. (2015). ग्रामीण-शहरी राजनीतिक विभाजन। क्लासिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 50(12), 67-72।
15. सिंह, आर. (2020)। ग्रामीण भारत में युवाओं में राजनीतिक जागरूकता। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी, 10(1), 55-70।
16. कुमार, आर. (2018). भारत में युवा और लोकतंत्र। जर्नल ऑफ पॉलिटिकल अध्ययन, 12(2), 45-60।
17. मोस, डी. (2018). जाति और विकास. विश्व विकास, 110, 422-436।
<https://doi.org/10.1016/j.worlddev.2018.06.013>
18. मार्टेली, जे. टी. (2021)। भारत में छात्र राजनीति। भारतीय राजनीति में अध्ययन, 9(1), 7-20।
<https://doi.org/10.1177/2321023021999140>
19. डायसन, जे., और जेफरी, सी. (2018)। युवा राजनीति और सामाजिक परिवर्तन। ब्रिटिश भूगोलवेत्ता संस्थान के लेनदेन, 43(4), 573-585। <https://doi.org/10.1111/trans.12245>
20. सलोवारा, आई. (2022)। उदारीकरण के बाद के भारत में जाति। साउथ एशिया जर्नल, 45(6), 968-985। <https://doi.org/10.1080/00856401.2022.2113701>